International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745
Received: 03-07-2026, Accepted: 02-08-2026, Published: 17-08-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 159-165

स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में भविष्य के भारत की परिकल्पना

डॉ वंदना शर्मा [1], अशोक यादव [2]
[1] प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
स्वामी विवेकानन्द ने भारत के भविष्य की परिकल्पना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखी, बल्कि ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो आध्यात्मिक रूप से जागृत, सामाजिक रूप से समतामूलक, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तथा नैतिक रूप से सुदृढ़ हो। उनके अनुसार भविष्य का राष्ट्र ऐसा होना चाहिए जहाँ सभी नागरिकों को समान अवसर और सम्मान मिले। विश्व धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण में विवेकानंद ने विश्वबंधुत्व, धार्मिक सहिष्णुता और मानव एकता का संदेश दिया। उनके अनुसार भविष्य का आदर्श राष्ट्र वह है जो अपनी संस्कृति को बनाए रखते हुए पूरी मानवता के कल्याण के लिए कार्य करे। भविष्य की भारतीय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो आत्मविश्वास, आत्मबल, विवेक, नैतिकता और कर्मशीलता का विकास करे। इस प्रकार की शिक्षा व्यक्ति को केवल विद्वान नहीं, बल्कि आदर्श नागरिक और सशक्त राष्ट्रनिर्माता बनाती है। विवेकानंद के अनुसार भविष्य की शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। उनका स्पष्ट कथन है कि यदि शिक्षा मनुष्य में सत्यनिष्ठा, साहस, आत्मसंयम, अनुशासन और सेवा–भाव उत्पन्न नहीं करती, तो वह अधूरी है। भविष्य चिंतन के संदर्भ में उनके विचार यह स्पष्ट करते हैं कि यदि व्यक्ति का चरित्र सुदृढ़ होगा तो उसका भविष्य सुरक्षित, समाज संगठित और राष्ट्र शक्तिशाली बनेगा। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद के अनुसार चरित्र निर्माण केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और मानवता के कल्याण का मूल आधार है। स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में महिला सशक्तिकरण राष्ट्र निर्माण और सामाजिक प्रगति का अनिवार्य आधार है। उनका स्पष्ट मत था कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति तब तक संभव नहीं है जब तक उसकी महिलाएँ शिक्षित, आत्मनिर्भर, सम्मानित और सशक्त न हों। भविष्य चिंतन के संदर्भ में विवेकानंद का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण नैतिक नेतृत्व, जनकल्याण और लोकभागीदारी पर आधारित है। वे मानते थे कि राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है जब शासन और समाज दोनों का उद्देश्य जनसेवा, न्याय, समान अवसर और नैतिक उत्तरदायित्व हो। उन्होंने युवाओं से चरित्रवान, निर्भीक और राष्ट्रनिष्ठ बनने का आह्वान किया, क्योंकि उनके अनुसार ऐसे नागरिक ही लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ बना सकते हैं। स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में विश्वगुरु भारत की अवधारणा भारत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय नेतृत्व क्षमता पर आधारित है। उनके अनुसार भारत का भविष्य केवल आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक शक्ति या सैन्य सामर्थ्य से नहीं, बल्कि अपनी प्राचीन आध्यात्मिक परंपरा, सार्वभौमिक मानव मूल्यों और ज्ञान–विज्ञान के समन्वय के माध्यम से निर्मित होगा।

मुलशब्द: स्वामी विवेकानंद, भविष्य चिंतन, राष्ट्र निर्माण, आध्यात्मिक जागरण, सामाजिक समानता

प्रस्तावना

आज संपूर्ण विश्व अनेक प्रकार के द्वंदों के मध्य से गुजर रहा है कहीं देश, कहीं भाषा, कहीं परिवार तथा कहीं संप्रदाय इत्यादि अनेक प्रकार के भीषण द्वंद संपूर्ण विश्व में व्याप्त हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने इन सभी प्रकार के द्वंदों पर विजय प्राप्त करने का एकमात्र उपाय धर्म बताया तथा इसी धर्म की स्थापना संपूर्ण विश्व में की। श्री रामकृष्ण परमहंस के महान शिष्य के रूप में विगत छः शताब्दियों में वह प्रथम हिंदू धर्म प्रचारक सन्यासी थे जो देश – देशांतरों में गए और जिन्होंने हिंदू राष्ट्र के सनातन धर्म का संदेश पुनः विश्व को दिया। एक महान देशभक्त, समाज सुधारक और संगठन के अतिरिक्त राष्ट्रीय पुनरुत्थान की शक्तियों को परिचालित करने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे और उन्होंने अंग्रेजी शासन के प्रथम आधात से विश्रृंखलित और पराभूत राष्ट्र के पुनर्निर्माण का पथ प्रशस्त किया।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के भविष्य की परिकल्पना केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं रखी, बल्कि ऐसे राष्ट्र की कल्पना की जो आध्यात्मिक रूप से जागृत, सामाजिक रूप से समतामूलक, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर तथा नैतिक रूप से सुदृढ़ हो। उनके लिए भारत का पुनर्निर्माण जनसाधारण के उत्थान, शिक्षा के प्रसार, सामाजिक समानता और चरित्र–निर्माण पर आधारित था।विवेकानन्द का मानना था कि भारत की वास्तविक शक्ति गाँवों और सामान्य जनता में निहित है। जब तक गरीब, अशिक्षित और वंचित वर्ग उन्नत नहीं होंगे, तब तक राष्ट्र का विकास अधूरा रहेगा। उन्होंने कहा-

"The nation lives in the cottages- No amount of politics would be of any avail until the masses of India are once more well educated, well fed and well cared for"
— 'The Future of India' in The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol- *5*,

यह कथन उनके समान अवसर तथा वंचित वर्गों को अधिक सहायता देने के सिद्धांत को स्पष्ट करता है। विवेकानन्द ने जन्म–आधारित ऊँच–नीच का विरोध किया और सभी को धर्म एवं शिक्षा का समान अधिकार देने की वकालत की। उन्होंने ब्राह्मणों से आह्वान किया कि वे धर्म का ज्ञान सभी वर्गों तक पहुँचाएँ और समाज के अंतिम व्यक्ति को भी आध्यात्मिक अधिकार प्रदान करें।

— 'Conversations and Dialogues' in The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol- *7*,

स्वामी विवेकानंद के अनुसार भविष्य का राष्ट्र केवल आर्थिक या राजनीतिक रूप से शक्तिशाली नहीं होना चाहिए, बल्कि आध्यात्मिक, नैतिक, शिक्षित, आत्मनिर्भर, समतामूलक और मानवतावादी होना चाहिए। उनका विश्वास था कि भारत का भविष्य उसकी आध्यात्मिक चेतना, युवाशक्ति, शिक्षा और जनसेवा

पर आधारित होगा। वे कहते थे कि राष्ट्र का उत्थान तभी संभव है जब उसके नागरिक चरित्रवान, निडर और कर्मशील हों। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी आध्यात्मिक संस्कृति है। भविष्य का राष्ट्र ऐसा होना चाहिए जहाँ सत्य, करुणा, सहिष्णुता, आत्मसंयम और सेवा जैसे नैतिक मूल्य जीवन का आधार बनें।

स्वामी विवेकानंद का यह विचार कि "प्रत्येक आत्मा मूलतः दिव्य है।" ***(*** Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1)*** बताता है कि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वर का अंश है, इसलिए सभी के प्रति सम्मान और समानता का व्यवहार होना चाहिए।

उनके अनुसार भविष्य का राष्ट्र ऐसा होना चाहिए जहाँ सभी नागरिकों को समान अवसर और सम्मान मिले। वे जाति, ऊँच–नीच और भेदभाव के विरोधी थे। विवेकानंद आत्मनिर्भरता और परिश्रम को राष्ट्र की उन्नति का आधार मानते थे। वे चाहते थे कि भारत अपने ज्ञान, विज्ञान, उद्योग और संस्कृति के बल पर आगे बढ़े तथा दूसरों पर निर्भर न रहे। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और सम्मान को राष्ट्र की प्रगति के लिए अनिवार्य माना। उनका विचार था कि जिस समाज में महिलाओं को समान अवसर नहीं मिलता, वह पूर्ण विकास नहीं कर सकता।

"किसी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम मापदंड वहाँ की महिलाओं की स्थिति है।"— The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol- 5

विश्व धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण में विवेकानंद ने विश्वबंधुत्व, धार्मिक सहिष्णुता और मानव एकता का संदेश दिया। उनके अनुसार भविष्य का आदर्श राष्ट्र वह है जो अपनी संस्कृति को बनाए रखते हुए पूरी मानवता के कल्याण के लिए कार्य करे।

- **युवा शक्ति का आह्वान**

भारत के भविष्य के निर्माण में उन्होंने युवाओं को सबसे बड़ी शक्ति माना। उनका विश्वास था कि भारत का भविष्य युवाओं के हाथ में है। वे युवाओं को शक्तिशाली, अनुशासित, परिश्रमी और राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित देखना चाहते थे। "उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।" — ***(***The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***7)*** कठोपनिषद् का उद्धरण, जिसे विवेकानंद ने अपने भाषणों में लोकप्रिय बनाया। उनके अनुसार राष्ट्र का भविष्य ऐसे युवाओं पर निर्भर है जो निडर, अनुशासित, कर्मशील और राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित हों।युवाओं को संबोधित करते हुए मे वे कहते हैं

" मेरे युवा मित्रों, दृढ़ रहो , यही मेरी तुम्हें सलाह है। गीता के अध्ययन से कहीं अधिक फुटबॉल के माध्यम से तुम स्वर्ग के निकट पहुँचोगे। ये शब्द थोड़े कठोर हैं, पर मुझे कहना ही पड़ेगा, क्योंकि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। मैं जानता हूँ कि दर्द कहाँ होता है। मुझे थोड़ा अनुभव है। अपनी मांसपेशियों को थोड़ा मजबूत करके तुम गीता को बेहतर ढंग से समझ पाओगे। "-The Complete Work of Swami Vivekanand**,** Vol III**,** ***242***

वे जोशीले एवं ईमानदार युवा शक्ति को क्रांति का मूल आधार मानते हैं वे आह्वान करते हुए कहते हैं कि–

" पुरुषों की आवश्यकता है, पुरुषों की ही आवश्यकता है: बाकी सब तो तैयार रहेगा, लेकिन मजबूत, जोशीले, दृढ़ निश्चयी, सच्चे और ईमानदार युवकों की आवश्यकता है। ऐसे सौ युवक मिल जाएं तो दुनिया में क्रांति आ जाएगी।" (-The Complete Work of Swami Vivekanand**,** Vol III**,** ***223–224***)

उज्ज्वल भविष्य वाले भारत के लिए वे केवल युवा शक्ति मे ही विश्वास करते हैं वे आह्वान करते हुए कहते हैं कि– " मेरी आस्था युवा पीढ़ी में है, आधुनिक पीढ़ी में हैय उन्हीं में से मेरे कार्यकर्ता निकलेंगे। वे शेरों की तरह सारी समस्या का हल निकालेंगे। मैंने यह विचार बना लिया है और अपना जीवन इसे समर्पित कर दिया है। वे केंद्र–केंद्र फैलेंगे, जब तक कि हम पूरे भारत को कवर न कर लें।" (Pp ***223***)

" भविष्य के लिए मेरी आशा चरित्रवान युवाओं में निहित है – जो बुद्धिमान हों, दूसरों की सेवा के लिए सब कुछ त्याग दें और आज्ञाकारी हों – जो मेरे विचारों को साकार करने में अपने जीवन का बलिदान दे सकें और इस प्रकार स्वयं और पूरे देश का भला कर सकें।"

वे युवाओं मे कुछ विशेष गुणों का विकास देखना कहते हैं जैसे आज्ञाकारिता , तपस्या एवं लक्ष्य के प्रति प्रेम , वे कहते हैं वीरोंचित व्यवहार को वे युवाओं का विशेष गुण मानते हैंवे आह्वान करते हुए कहते हैं कि

" मेरे बेटे, जब मृत्यु अपरिहार्य है, तो पत्थर की तरह बेहाल होकर मरने से वीरों की तरह मरना क्या बेहतर नहीं है? और इस क्षणभंगुर संसार में एक–दो दिन और जीने का क्या लाभ? दूसरों का थोड़ा सा भी भला करने के लिए भी जड़वत हो जाने से बेहतर है कि घिसकर मर जाएं।"

"एक लाख पुरुष और महिलाएं, पवित्रता के उत्साह से ओतप्रोत, प्रभु में शाश्वत आस्था से पुष्ट, और गरीबों, पतितों और दलितों के प्रति अपनी सहानुभूति से सिंह समान साहस से प्रेरित होकर, देश के कोने–कोने में जाकर उद्धार का सुसमाचार, सहायता का सुसमाचार, सामाजिक उत्थान का सुसमाचार – समानता का सुसमाचार का प्रचार करेंगे।"

" महान कार्य केवल महान बलिदानों से ही संभव हैं। कोई स्वार्थ नहीं, कोई नाम नहीं, कोई प्रसिद्धि नहीं, न तुम्हारी, न मेरी, न मेरे गुरु की! काम करो, अपने विचार पर, अपनी योजना पर काम करो, मेरे साथियों, मेरे बहादुर, नेक, अच्छे लोगों – पहिए पर लग जाओ, पहिए पर अपना कंधा लगाओ! नाम, प्रसिद्धि या ऐसी किसी भी व्यर्थ चीज के लिए पीछे मुड़कर मत देखो। स्वार्थ को त्याग दो और काम करो।"

" आओ, मर्द बनो! अपनी संकीर्ण सोच से बाहर निकलो और बाहर देखो। देखो कैसे राष्ट्र प्रगति की ओर अग्रसर हैं! क्या तुम मानवता से प्रेम करते हो? क्या तुम अपने देश से प्रेम करते हो? तो आओ, हम सब मिलकर बेहतर और उच्चतर लक्ष्यों के लिए संघर्ष करेंय पीछे मुड़कर मत देखो, यहाँ तक कि अपने सबसे प्रिय और निकटतम को भी रोते हुए देखकर भी नहीं। पीछे मुड़कर मत देखो, बल्कि आगे बढ़ो!"

विवेकानंद जी के अनुसार देश के लिए बलिदान हो जाना ही वीर युवाओं का उद्देश्य होना चाहिए राष्ट्र प्रेम से बड़ा कुछ नहीं होता वे आह्वान करते हुए कहते हैं कि

" जागो, जाग जाओ, क्योंकि तुम्हारे देश को इस महान बलिदान की आवश्यकता है। यह बलिदान युवा ही करेंगे। श्युवा, ऊर्जावान, बलवान, सुगठित और बुद्धिमानश – यही उनका कर्तव्य है।"

" मृत्यु तक काम करो – मैं तुम्हारे साथ हूँ, और मेरे जाने के बाद भी मेरी आत्मा तुम्हारे साथ काम करती रहेगी। यह जीवन आता–जाता रहता है – धन, प्रसिद्धि, सुख–सुविधाएँ कुछ ही दिनों की होती हैं। सांसारिक कीड़े की तरह मरने से कहीं बेहतर है कि कर्तव्य के मैदान में सत्य का प्रचार करते हुए मर जाओ। आगे बढ़ो! ";— The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol- 5)

- **भविष्य की शिक्षा का स्वरूप**

स्वामी विवेकानंद के अनुसार भारत की भविष्य की शिक्षा का स्वरूप केवल ज्ञानार्जन या रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि उसका उद्देश्य ऐसे चरित्रवान, आत्मनिर्भर, साहसी और राष्ट्रनिष्ठ मनुष्य का निर्माण होना चाहिए जो अपने जीवन को समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए समर्पित कर

सके। वे शिक्षा को **'**मनुष्य निर्माण**'**(Man-making Education) की प्रक्रिया मानते थे। उनका प्रसिद्ध कथन हैकृ "Education is the manifestation of the perfection already in man-"अर्थात~ शिक्षा मनुष्य के भीतर निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है। उनके अनुसार प्रत्येक बालक में असीम शक्ति, प्रतिभा और दिव्यता विद्यमान है शिक्षा का कार्य इन अंतर्निहित शक्तियों को जागृत करना है, न कि केवल बाहरी सूचनाओं का संग्रह कराना। इसलिए भविष्य की भारतीय शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो आत्मविश्वास, आत्मबल, विवेक, नैतिकता और कर्मशीलता का विकास करे। इस प्रकार की शिक्षा व्यक्ति को केवल विद्वान नहीं, बल्कि आदर्श नागरिक और सशक्त राष्ट्रनिर्माता बनाती है।

विवेकानंद का मत था कि भारत की शिक्षा व्यवस्था भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और आधुनिक विज्ञान के समन्वय पर आधारित होनी चाहिए। वे पश्चिम की वैज्ञानिक दृष्टि और तकनीकी प्रगति का स्वागत करते थे, किंतु उसका अंधानुकरण नहीं चाहते थे। उनके अनुसार भारत को ऐसी शिक्षा अपनानी चाहिए जिसमें वेदांत के आध्यात्मिक आदर्शों के साथ विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्योग, कृषि तथा व्यावसायिक कौशल का भी समावेश हो। उनका विश्वास था कि आध्यात्मिकता और विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक–दूसरे के पूरक हैं। इसलिए भविष्य की शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक तैयार करना होना चाहिए जो आधुनिक ज्ञान–विज्ञान में दक्ष होने के साथ–साथ नैतिक मूल्यों, सेवा, सत्य और आत्मानुशासन से भी संपन्न हों।

स्वामी विवेकानंद विशेष रूप से जनसाधारण की शिक्षा पर बल देते थे। उनका मानना था कि जब तक गाँवों, गरीबों, श्रमिकों, किसानों तथा समाज के वंचित वर्गों तक शिक्षा नहीं पहुँचेगी, तब तक भारत का वास्तविक उत्थान संभव नहीं है। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में भारत की भविष्य की शिक्षा एक ऐसी समग्र शिक्षा है जो व्यक्ति के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संतुलित विकास करते हुए उसे चरित्रवान, आत्मनिर्भर, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से युक्त, आध्यात्मिक चेतना से संपन्न तथा राष्ट्रसेवा के लिए समर्पित नागरिक के रूप में विकसित करे।

- **स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में चरित्र निर्माण**

स्वामी विवेकानंद के विचारों में चरित्र निर्माण भविष्य के निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। उनका मानना था कि किसी भी व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का उज्ज्वल भविष्य केवल भौतिक प्रगति, धन या ज्ञान से नहीं, बल्कि सुदृढ़ चरित्र से निर्मित होता है। विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्तित्व का विकास करना है जो सत्यनिष्ठ, निडर, आत्मविश्वासी, अनुशासित और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो। वे कहते हैं कि **"**मनुष्य के विचार, कर्म और संस्कार मिलकर उसके चरित्र का निर्माण करते हैं, और यही चरित्र उसके भविष्य की दिशा निर्धारित करता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में सत्य, ईमानदारी, आत्मसंयम, परिश्रम और सेवा जैसे गुणों का विकास करना चाहिए।

-"Thought and Its Power"in The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1,***

स्वामी विवेकानंद का प्रसिद्ध कथन है**- "**हम वही हैं जो हमारे विचारों ने हमें बनाया है**,** इसलिए इस बात का ध्यान रखिए कि आप क्या सोचते हैं।**"** इस बात को स्पष्ट करता है कि सकारात्मक विचार और श्रेष्ठ आचरण ही महान चरित्र का आधार हैं। इसी प्रकार उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था – उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।[६] इस संदेश का उद्देश्य युवाओं में आत्मबल, दृढ़ संकल्प और नैतिक शक्ति का विकास करना था। विवेकानंद का विश्वास था कि चरित्रवान व्यक्ति ही समाज में आदर्श नेतृत्व प्रदान कर सकता है तथा राष्ट्र को उन्नति और समृद्धि के मार्ग पर ले जा सकता है। अतः भविष्य चिंतन के संदर्भ में उनके विचार यह स्पष्ट करते हैं कि यदि व्यक्ति का चरित्र सुदृढ़ होगा तो उसका भविष्य सुरक्षित, समाज संगठित और राष्ट्र शक्तिशाली बनेगा। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद के अनुसार चरित्र निर्माण केवल व्यक्तिगत विकास का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और मानवता के कल्याण का मूल आधार है। -The Complete Works of Swami Vivekananda**,** vol 1 & Vol 2, Advaita Ashrama

-Lectures from Colombo to Almora, Advaita Ashrama

- **स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में महिला सशक्तिकरण**

स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में महिला सशक्तिकरण राष्ट्र निर्माण और सामाजिक प्रगति का अनिवार्य आधार है। उनका स्पष्ट मत था कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति तब तक संभव नहीं है जब तक उसकी महिलाएँ शिक्षित, आत्मनिर्भर, सम्मानित और सशक्त न हों। वे भारतीय संस्कृति में नारी को केवल परिवार की संरक्षिका नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के रूप में देखते थे। विवेकानंद ने बार–बार इस बात पर बल दिया कि महिलाओं को पुरुषों के समान शिक्षा, आत्मविकास और निर्णय लेने के अवसर मिलने चाहिए। उनका मानना था कि शिक्षा ही महिलाओं को आत्मविश्वासी, विवेकशील और स्वावलंबी बनाती है तथा उन्हें सामाजिक कुरीतियों और अन्याय के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति प्रदान करती है। उन्होंने महिलाओं के उत्थान के लिए ऐसी शिक्षा की आवश्यकता बताई जो केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित न होकर चरित्र निर्माण, आत्मबल, नैतिकता और व्यावहारिक कौशल का विकास करे। स्वामी विवेकानंद का प्रसिद्ध कथन है **-** "There is no chance for the welfare of the world unless the condition of women is improved-" अर्थात **"**जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा, तब तक विश्व के कल्याण की कोई संभावना नहीं है।***"(***The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***5*** Advaita Ashrama.***)***

उनका यह विचार स्पष्ट करता है कि महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं के अधिकारों का प्रश्न नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज और राष्ट्र के विकास की पूर्वशर्त है। विवेकानंद ने भारतीय इतिहास में गार्गी, मैत्रेयी और सीता जैसी आदर्श महिलाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय समाज में नारी की गरिमा और ज्ञान की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है, जिसे पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है। उनके अनुसार नारी को दया या संरक्षण की नहीं, बल्कि समान अवसर, सम्मान और आत्मनिर्भरता की आवश्यकता है। भविष्य चिंतन के संदर्भ में विवेकानंद का यह दृष्टिकोण आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि महिला सशक्तिकरण के माध्यम से ही एक न्यायपूर्ण, समतामूलक, प्रगतिशील और सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव है।

'The Women of India' , The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***4,*** Advaita Ashrama

- **स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना**

स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना केवल आर्थिक स्वावलंबन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास का व्यापक दर्शन प्रस्तुत करती है। उनके अनुसार किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के आत्मविश्वास, चरित्र, शिक्षा, श्रम, आध्यात्मिक चेतना और आत्मनिर्भरता में निहित होती है। विवेकानंद का विश्वास था कि भारत तभी विश्व में अपना गौरवपूर्ण स्थान पुनः प्राप्त कर सकता है, जब उसके नागरिक अपनी आंतरिक शक्ति को पहचानें और परावलंबन छोड़कर

स्वावलंबन का मार्ग अपनाएँ। वे कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर असीम शक्ति विद्यमान है, आवश्यकता केवल उसे जागृत करने की है। उनका प्रसिद्ध कथन- "All power is within you; you can do anything and everything-"(अर्थात् **"**समस्त शक्ति तुम्हारे भीतर हैय तुम सब कुछ कर सकते हो।**"**) **-** (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol-***1***).
आत्मनिर्भरता के उनके दर्शन का मूल आधार है
आर्थिक दृष्टि से विवेकानंद ने स्वदेशी उद्योगों, श्रम की गरिमा, तकनीकी शिक्षा और गरीबों के उत्थान को राष्ट्रीय समृद्धि का आधार माना। उनका विचार था कि जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति शिक्षित, कुशल और आत्मनिर्भर नहीं बनेगा, तब तक राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। इसलिए उन्होंने ग्रामीण विकास, कुटीर उद्योग, व्यावसायिक शिक्षा और समाज के वंचित वर्गों के सशक्तीकरण पर विशेष बल दिया। उनके लिए आत्मनिर्भरता का अर्थ केवल उत्पादन बढ़ाना नहीं, बल्कि ऐसा समाज बनाना था जहाँ प्रत्येक व्यक्ति सम्मानपूर्वक अपनी आजीविका अर्जित कर सके और राष्ट्र की प्रगति में सहभागी बने।

- **स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की संकल्पना**

स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में **'**आध्यात्मिक राष्ट्रवाद**'** भारत के पुनर्जागरण का मूल आधार है। उनके अनुसार किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी भौतिक संपन्नता, सैन्य बल या राजनीतिक प्रभुत्व में नहीं, बल्कि उसके आध्यात्मिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों और सांस्कृतिक चेतना में निहित होती है। विवेकानंद का विश्वास था कि भारत का राष्ट्रीय जीवन धर्म और अध्यात्म पर आधारित है, इसलिए भारत का उत्थान भी आध्यात्मिक जागरण के माध्यम से ही संभव है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि प्रत्येक राष्ट्र का एक विशिष्ट आदर्श होता है और भारत का आदर्श धर्म एवं अध्यात्म है। उनका मत था कि यदि भारत अपनी आध्यात्मिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक विज्ञान, शिक्षा और तकनीकी प्रगति को अपनाए, तो वह पुनः विश्वगुरु के रूप में प्रतिष्ठित हो सकता है। इस प्रकार विवेकानंद का राष्ट्रवाद संकीर्ण, आक्रामक या विस्तारवादी न होकर मानवता, सार्वभौमिक बंधुत्व और आध्यात्मिक एकता पर आधारित राष्ट्रवाद है (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol-***3***).
स्वामी विवेकानंद के अनुसार आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का आधार मानव सेवा है। वे प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का स्वरूप देखते थे और मानते थे कि राष्ट्र की सेवा ही ईश्वर की सच्ची आराधना है। उनका प्रसिद्ध संदेश**–"**They alone live who live for others; the rest are more dead than alive**"**(अर्थात् **"**वही वास्तव में जीवित हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं**,** शेष तो जीवित होकर भी मृत समान हैं।**"**) **-**राष्ट्रवाद को सेवा, त्याग और लोककल्याण से जोड़ता है (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1***). उनके अनुसार राष्ट्र का उत्थान तभी संभव है जब समाज का प्रत्येक वर्ग, विशेषकर गरीब, वंचित और उपेक्षित लोग, शिक्षा, सम्मान और अवसर प्राप्त करें। इसलिए उन्होंने **'**दरिद्र नारायण**'** की सेवा को राष्ट्र–निर्माण का अनिवार्य अंग माना।
विवेकानंद के आध्यात्मिक राष्ट्रवाद में राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समन्वय का विशेष महत्व है। वे भारत की विविध धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक परंपराओं को उसकी शक्ति मानते थे। उन्होंने वेदांत के **'**एकत्व**'** (Oneness) के सिद्धांत को राष्ट्रीय एकता का दार्शनिक आधार माना और कहा कि समस्त मानवता एक ही परम सत्य की अभिव्यक्ति है। इसलिए उन्होंने जाति, संप्रदाय, भाषा और क्षेत्र के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध किया तथा प्रेम, सहिष्णुता, समन्वय और सार्वभौमिक बंधुत्व को राष्ट्रीय जीवन के आवश्यक मूल्य बताया। उनका विचार था कि भारत का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब उसके नागरिक आध्यात्मिक चेतना के आधार पर एक–दूसरे के प्रति सम्मान, सहयोग और सेवा की भावना विकसित करेंगे (Lectures from Colombo to Almora**,** Kolkata: Advaita Ashrama).

- **स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में लोकतांत्रिक मूल्यों की संकल्पना**

स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में लोकतांत्रिक मूल्य केवल शासन–व्यवस्था तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे मानव गरिमा, समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, सामाजिक न्याय और नैतिक उत्तरदायित्व पर आधारित जीवन–दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं। यद्यपि विवेकानंद ने आधुनिक लोकतंत्र की औपचारिक व्याख्या नहीं की, फिर भी उनके विचार लोकतांत्रिक मूल्यों के मूल तत्वों को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करते हैं। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य में दिव्यता विद्यमान है, इसलिए सभी व्यक्तियों को समान सम्मान, समान अवसर और आत्मविकास का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। वे वेदांत के **'**प्रत्येक आत्मा मूलतः दिव्य है**'** (Each soul is potentially divine) सिद्धांत के माध्यम से यह प्रतिपादित करते हैं कि जाति, वर्ग, लिंग, धर्म अथवा आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव मानवता के विरुद्ध है। इस प्रकार विवेकानंद का लोकतांत्रिक चिंतन मानव की गरिमा और समानता के सिद्धांत पर आधारित है (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1***).
स्वामी विवेकानंद के अनुसार लोकतांत्रिक समाज की सफलता का आधार शिक्षित, जागरूक और चरित्रवान नागरिक हैं। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति में आत्मविश्वास, नैतिकता, विवेक, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करना है। उनके अनुसार जब नागरिक नैतिक रूप से सशक्त होंगे, तभी लोकतंत्र वास्तविक अर्थों में सफल होगा। विवेकानंद ने लोकतांत्रिक मूल्यों के अंतर्गत सामाजिक समानता और समावेशिता को विशेष महत्व दिया। उन्होंने जातिगत ऊँच–नीच, अस्पृश्यता, सामाजिक भेदभाव तथा शोषण का विरोध किया और समाज के गरीब, वंचित तथा उपेक्षित वर्गों के उत्थान को राष्ट्र की प्राथमिकता माना। उनका प्रसिद्ध संदेश**-**"They alone live who live for others; the rest are more dead than alive-" (अर्थात् **"**वही वास्तव में जीवित हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं**,** शेष तो जीवित होकर भी मृत समान हैं।**"**)-लोकतांत्रिक समाज में सेवा, सहयोग और सामाजिक उत्तरदायित्व के महत्व को रेखांकित करता है (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1***).उनके अनुसार लोकतंत्र तभी सार्थक है जब समाज का अंतिम व्यक्ति भी सम्मान, शिक्षा, अवसर और न्याय प्राप्त कर सके।
स्वामी विवेकानंद ने धार्मिक सहिष्णुता, विचारों की स्वतंत्रता और सांस्कृतिक बहुलता को भी लोकतांत्रिक जीवन का आवश्यक आधार माना। उन्होंने सभी धर्मों के प्रति सम्मान और समन्वय का संदेश दिया तथा यह प्रतिपादित किया कि सत्य तक पहुँचने के अनेक मार्ग हो सकते हैं। उनके शिकागो धर्म संसद (***1893***) के भाषणों में धार्मिक सहिष्णुता, पारस्परिक सम्मान और वैश्विक बंधुत्व की भावना स्पष्ट रूप से व्यक्त होती है। उनके अनुसार लोकतंत्र केवल मताधिकार का अधिकार नहीं, बल्कि विविध विचारों, संस्कृतियों और आस्थाओं का सम्मान करने वाली जीवन–पद्धति है ***(***The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1*** Kolkata: Advaita Ashrama***)***
भविष्य चिंतन के संदर्भ में विवेकानंद का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण नैतिक नेतृत्व, जनकल्याण और लोकभागीदारी पर आधारित है। वे मानते थे कि राष्ट्र की उन्नति तभी संभव है जब शासन और

समाज दोनों का उद्देश्य जनसेवा, न्याय, समान अवसर और नैतिक उत्तरदायित्व हो। उन्होंने युवाओं से चरित्रवान, निर्भीक और राष्ट्रनिष्ठ बनने का आह्वान किया, क्योंकि उनके अनुसार ऐसे नागरिक ही लोकतांत्रिक संस्थाओं को सुदृढ़ बना सकते हैं। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में लोकतांत्रिक मूल्य मानव गरिमा, समानता, स्वतंत्रता, सेवा, सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और नैतिकता पर आधारित एक आदर्श समाज और सशक्त राष्ट्र की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं, जो आज भी भारतीय लोकतंत्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

- **स्वामी विवेकानंद के चिंतन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं आध्यात्मिकता का समन्वय**

स्वामी विवेकानंद के चिंतन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आध्यात्मिकता का समन्वय उनकी दार्शनिक दृष्टि का एक महत्वपूर्ण आयाम है। उनका मानना था कि विज्ञान और अध्यात्म एक–दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि सत्य की खोज के दो परस्पर पूरक मार्ग हैं। विज्ञान बाह्य जगत के नियमों, पदार्थ और प्रकृति का अध्ययन करता है, जबकि अध्यात्म मनुष्य के आंतरिक जगत, चेतना और आत्मा का अन्वेषण करता है। विवेकानंद के अनुसार दोनों का अंतिम उद्देश्य सत्य की खोज और मानव कल्याण है। इसलिए उन्होंने भारतीय समाज से अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और संकीर्णता को त्यागकर तर्क, अनुभव और विवेक पर आधारित वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने का आह्वान किया। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि विज्ञान तभी मानवता के लिए कल्याणकारी बन सकता है जब उसका संचालन नैतिकता, आध्यात्मिक मूल्यों और मानवीय संवेदनाओं के साथ हो। उनके अनुसार केवल भौतिक उन्नति मनुष्य को पूर्ण संतुष्टि नहीं दे सकतीय उसके लिए आत्मिक विकास भी उतना ही आवश्यक है (The Complete Works of Swami Vivekananda] Vol- ***1***).

स्वामी विवेकानंद ने वेदांत को एक अनुभवपरक (experiential) दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया। उनका कहना था कि धर्म केवल आस्था या परंपरा का विषय नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव का विज्ञान है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार विज्ञान प्रयोग और परीक्षण के आधार पर सत्य को स्वीकार करता है, उसी प्रकार आध्यात्मिक सत्य भी साधना, आत्मानुभूति और अनुभव के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते हैं। इसी कारण उन्होंने धर्म में अंधविश्वास के स्थान पर विवेक, तर्क और अनुभव को महत्व दिया। उनका प्रसिद्ध कथन है—"Religion is realization-" अर्थात् "धर्म का सार प्रत्यक्ष अनुभूति है।" यह कथन स्पष्ट करता है कि विवेकानंद अध्यात्म को भी वैज्ञानिक पद्धति की तरह अनुभव और सत्यापन पर आधारित मानते थे (The Complete Works of Swami Vivekanandam, Vol- ***2***).

विवेकानंद के अनुसार आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग राष्ट्र और मानवता के विकास के लिए किया जाना चाहिए, किंतु उसके साथ नैतिकता और आध्यात्मिक चेतना का संतुलन बनाए रखना भी आवश्यक है। उन्होंने शिक्षा को इस समन्वय का प्रमुख माध्यम माना। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति में वैज्ञानिक सोच, तार्किक क्षमता, रचनात्मकता और समस्या–समाधान की योग्यता विकसित करे, साथ ही चरित्र निर्माण, आत्मसंयम, सेवा–भाव और नैतिक मूल्यों का भी विकास करे। उनका प्रसिद्ध कथन**-** "Education is the manifestation of the perfection already in man-"अर्थात् **"**शिक्षा मनुष्य में निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है***"-*** इस समग्र शिक्षा–दृष्टि को स्पष्ट करता है (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***4***). इस प्रकार वे ऐसी शिक्षा का समर्थन करते हैं जो विज्ञान और अध्यात्म दोनों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय कर व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करे।

भविष्य की दृष्टि से विवेकानंद का यह समन्वित चिंतन आज और भी अधिक प्रासंगिक है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव–प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष विज्ञान और डिजिटल प्रगति के युग में जहाँ विज्ञान मानव जीवन को नई संभावनाएँ प्रदान कर रहा है, वहीं नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों की चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं। विवेकानंद का मत था कि यदि वैज्ञानिक प्रगति को आध्यात्मिक मूल्यों, आत्मानुशासन और मानव सेवा की भावना के साथ जोड़ा जाए, तो विज्ञान संपूर्ण मानवता के कल्याण का साधन बन सकता है। इसलिए उनका चिंतन आधुनिक भारत के लिए एक ऐसे विकास मॉडल का मार्गदर्शन करता है जिसमें वैज्ञानिक नवाचार और आध्यात्मिक चेतना मिलकर एक न्यायपूर्ण, नैतिक, मानवीय और सतत् समाज का निर्माण करें। इस प्रकार स्वामी विवेकानंद के विचार विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय पर आधारित समग्र मानव विकास की एक दूरदर्शी और सार्वकालिक अवधारणा प्रस्तुत करते हैं।

स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में विश्वगुरु भारत की अवधारणा भारत की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय नेतृत्व क्षमता पर आधारित है। उनके अनुसार भारत का भविष्य केवल आर्थिक समृद्धि, राजनीतिक शक्ति या सैन्य सामर्थ्य से नहीं, बल्कि अपनी प्राचीन आध्यात्मिक परंपरा, सार्वभौमिक मानव मूल्यों और ज्ञान–विज्ञान के समन्वय के माध्यम से निर्मित होगा। विवेकानंद का विश्वास था कि भारत का ऐतिहासिक दायित्व विश्व को आध्यात्मिक दृष्टि, सहिष्णुता, सार्वभौमिक बंधुत्व और मानव एकता का संदेश देना है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक विशिष्ट आदर्श होता है और भारत का आदर्श धर्म एवं अध्यात्म है। इसलिए भारत यदि अपनी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शिक्षा को अपनाए, तो वह पुनः विश्व का नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक बन सकता है (The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol- ***3***).

स्वामी विवेकानंद के अनुसार विश्वगुरु भारत की संकल्पना का आधार वेदांत का सार्वभौमिक दर्शन है, जो समस्त मानवता की एकता, समानता और बंधुत्व का संदेश देता है। उन्होंने ***1893*** में ॅवतसकश् च्तसपंउमदज वि्मसपहपवदेमें अपने ऐतिहासिक भाषण के माध्यम से भारत की धार्मिक सहिष्णुता और **'**सर्वधर्म समभाव**'** की भावना को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। उनके प्रसिद्ध संबोधन—"Sisters and Brothers of America"—us केवल श्रोताओं का हृदय नहीं जीता, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि भारत की संस्कृति समावेश, सह–अस्तित्व और मानवता के आदर्शों पर आधारित है। उन्होंने स्पष्ट कहा कि भारत का संदेश किसी एक धर्म या संप्रदाय की श्रेष्ठता का नहीं, बल्कि सभी धर्मों के प्रति सम्मान और सत्य की विविध अभिव्यक्तियों को स्वीकार करने का है (Chicago Addresses**,** in the Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1***).

विवेकानंद ने विश्वगुरु भारत के निर्माण में शिक्षा, चरित्र निर्माण और युवा शक्ति को निर्णायक महत्व दिया। उनका मानना था कि राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति उसके चरित्रवान, आत्मविश्वासी और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक हैं। उन्होंने ऐसी शिक्षा का समर्थन किया जो व्यक्ति में आत्मबल, नैतिकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सेवा–भाव और नेतृत्व क्षमता का विकास करे। साथ ही उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा**-** "उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।" यह संदेश केवल व्यक्तिगत सफलता का नहीं, बल्कि राष्ट्र के पुनर्जागरण और वैश्विक नेतृत्व की तैयारी का भी आह्वान है (The Complete Works of Swami Vivekananda**,** Vol- ***1***).

स्वामी विवेकानंद ने विश्वगुरु भारत की संकल्पना को केवल आध्यात्मिक नेतृत्व तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सामाजिक न्याय, महिला सशक्तिकरण, गरीबों के उत्थान, आत्मनिर्भरता,

विज्ञान और आध्यात्मिकता के समन्वय से भी जोड़ा। उनके अनुसार भारत तभी विश्व का नेतृत्व कर सकता है जब वह अपने समाज से गरीबी, अशिक्षा, जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता को दूर कर प्रत्येक नागरिक को सम्मान और अवसर प्रदान करे। वे ष्दरिद्र नारायणष की सेवा को राष्ट्रधर्म मानते थे और कहते थे कि राष्ट्र की वास्तविक उन्नति अंतिम व्यक्ति के उत्थान में निहित है। इस प्रकार उनके लिए विश्वगुरु भारत का अर्थ ऐसा राष्ट्र था जो अपनी आंतरिक शक्तियों को विकसित कर मानवता के कल्याण के लिए ज्ञान, नैतिकता और करुणा का मार्ग प्रशस्त करे (स्मबजनतमे तिवउ ब्वसवउइव जव ।सउवतं).

समग्र रूप से स्वामी विवेकानंद के भविष्य चिंतन में विश्वगुरु भारत की अवधारणा किसी राजनीतिक प्रभुत्व या सांस्कृतिक वर्चस्व की नहीं, बल्कि ज्ञान, आध्यात्मिकता, नैतिक नेतृत्व, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक समरसता और मानव सेवा पर आधारित वैश्विक नेतृत्व की संकल्पना है। उनका विश्वास था कि भारत अपनी आध्यात्मिक चेतना, सांस्कृतिक समृद्धि और मानवीय मूल्यों के आधार पर विश्व को शांति, सह–अस्तित्व और सतत् विकास का मार्ग दिखा सकता है। आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भी विवेकानंद का यह दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह शक्ति के बजाय मूल्यों, प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग और विभाजन के बजाय मानव एकता पर आधारित विश्व व्यवस्था का समर्थन करता है।

स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में भारत का भविष्य ऐसा राष्ट्र है जहाँ शिक्षा सबके लिए उपलब्ध हो, सामाजिक भेदभाव समाप्त हो, गरीब और वंचित वर्ग सशक्त हों, युवा चरित्रवान एवं कर्मयोगी बनें, तथा विज्ञान और आध्यात्मिकता का संतुलित समन्वय स्थापित हो। उनकी दृष्टि में भारत की महानता केवल आर्थिक समृद्धि में नहीं, बल्कि ऐसे समाज के निर्माण में है जो मानव गरिमा, सामाजिक न्याय, आध्यात्मिक चेतना और सार्वभौमिक बंधुत्व पर आधारित हो।

संदर्भ सूची

1. Alengadan, V. (1997). Human existence and transcendence in Swami Vivekananda's and Mircea Eliade's thought (Doctoral dissertation, Graduate Theological Union, California). (PhilPapers)
2. Altman, M. J. (2013). Imagining Hindus: India and religion in nineteenth century America (Doctoral dissertation, Emory University). (Emory Theses and Dissertations)
3. Basak, Prantik**,** - ***2025, ,***Social Issues and Challenges in India: A Contemporary Perspective
4. Beckerlegge, G. (2006). Swami Vivekananda's legacy of service. New Delhi, India: Oxford University Press.
5. Burke, M. L. (1983–1987). Swami Vivekananda in the West: New discoveries (Vols. 1–6). Kolkata, India: Advaita Ashrama.
6. Damle, A. N. (2025). Vivekananda on Culture and Inequality. Palgrave Macmillan. https://doi.org/10.1007/978-3-032-04531-7
7. Datta, Mala (1996) Bhartiya Punarjagran Me Swami Vivekanand Ka Avdan Ph D Banaras Hindu University
8. Dixit, P., Yadav, V. A Systematic Review of Empirical Research on Gender Inequality and Women's Empowerment in India. Discov Sustain **7**, 1118 (2026). Https://Doi.Org/10.1007/S43621-026-03125-9
9. Eastern and Western Disciples. (1912). The life of Swami Vivekananda (2 Vols.). Kolkata, India: Advaita Ashrama.
10. Gohit, Rajeev Kumar Role of Swami Vivekananda in National Awakening**,** Ph D Chaudhary Charan Singh University, Meerut
11. Gupta, Kanchan- Adhunik Bharatiya Darshan Ko Swami Vivekanand Ka Avadan: Ek Sameekshatmak Adhyayan- Ph-D- Thesis, Banaras Hindu University, 1998-
12. Hacker, P- (***1995***)- Philology and confrontation: Paul Hacker on traditional and modern Vedānta- Albany, NY: State University of New York Press-
13. Harris, R. (2023). Vivekananda: Indian Swami and Global Guru. Religions, 14(8), 1041.
14. Hauch, S. (2013). Reassessing religious experience in a scientific age: Early approaches to religious pluralism (Doctoral dissertation). University of Glasgow, United Kingdom.
15. Isherwood, C. (1965). Ramakrishna and his disciples. London, England: Methuen.
16. King, R. (1999). Orientalism and religion: Postcolonial theory, India and "The Mystic East". London, England: Routledge.
17. Kumar,Deepak 2008 Swami Vivekananda Ki Samajik Insaf Ki Avdharna Aur Uska Prabhav Ek VisleshnatmakAddyayan Chaudhary Charan Singh University
18. Long, J. D. (2024). On Swami Vivekananda and Caste Prejudice: Ethical Implications of the Experience of Non-Duality. Religions, 15(8), 889. https://doi.org/10.3390/rel15080889
19. Maharaj, A- (***2020***)- A Re-evaluation of Swami Vivekananda's Practical Vedanta in the Light of Sri Ramakrishna. - Journal of Dharma Studies, ***2***(***2***), ***175–187-***
20. Mahtani, N. A. (2017). Swami Vivekananda revisited: Continental collision and the (re)packaging of Hindu traditions (Doctoral dissertation). University of Kent, United Kingdom.
21. Mishra, Kavita- Swami Vivekanand Ke SamajikAvamRajneetikVicharo Ka Ek Alochanatmak Adhyayan-
22. Nikhilananda, S. (1953). Vivekananda: A biography. New York, NY: Ramakrishna-Vivekananda Center.
23. Ojha,Shweta (2010) AdhunikParipreksh Me Swami Vivekanand Ka Samajwadi Chintan Ph D Dr. Rammanohar Lohia Avadh University, Faizabad
24. Radice, W. (Ed.). (1998). Swami Vivekananda and the modernization of Hinduism. Delhi, India: Oxford University Press.
25. Rambachan, A. (1994). The limits of scripture: Vivekananda's reinterpretation of the Vedas. Honolulu, HI: University of Hawaii Press.
26. Rolland, R. (1931). The life of Vivekananda and the universal gospel. Kolkata, India: Advaita Ashrama.
27. Rüstau, H- (***1963***)- Swami Vivekananda: Patriot and Philosopher. Berlin: Research publication affiliated with Humboldt University.
28. Seetaram***(*** 2009***)*** Swami Vivekanand Ka Samajwadi Evam Manavwadi Darshan M. Phil , Department Of Political Science Maharaja Ganga Singh University, Bikaner
29. Sharma, A. (Ed.). (1993). Neo-Hindu views of Christianity. Leiden, The Netherlands: Brill Academic Publishers.

30. Sharma, Gita Rani- Swami Vivekanand Ke Vichar Aur Unka Rashtriya Chetna Par Prabhav- Ph-D- Thesis, Dr-Bhimrao Ambedkar University, Agra, 1980-
31. Sivakumar, M V 2006 Contributions of Swami Vivekananda to The National Integration of India Ph D School of Social Sciences Mahatma Gandhi University Kottayam Kerala
32. Venkateswarlu, K 2012 Swami Vivekananda and The Dignity of The Human Person A Critical Study Department of Philosophy Sri Venkateswara University Tirupati **,** Andhra Pradesh
33. Vivekananda, S. (2013). The complete works of Swami Vivekananda (Vols. 1–9). Kolkata, India: Advaita Ashrama.
34. Yadav, Satyadev 1999 Swami Vivekanand Ka Samaj Darshan Evam Dharm Darshan Ph D Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
35ण गुप्ता. विनीत (***2024***). स्वामी विवेकान्द के राजनैतिक एव सामाजिक चिंतन की वर्तमान परिपेक्ष में सार्थकता . भारतीय आधुनिक शिक्षा, ***33***(***04***), p. ***35–43-***
36ण तिवारी, विनोद प्रकाश एवं यादव, सत्य नारायण (***2026***). भारतीय ज्ञानपरंपरा के संदर्भ में स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का विश्लेषण**,** International Journal of Research in Academic World, Vol. ***5(6).***
37. शर्मा, संतोष कुमार, एवं अग्रवाल, अक्षय (2023) .स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन एवं वर्तमान शैक्षिकर्प्तिमान का तुलनात्मक अध्ययन Recent Educational – Psychological Researches, 12(4), 32-37, ISSN: 22785949,
38. रेनू एवं चौहान, भूपेंद्र सिंह (2022) ,वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य म स्वामी विवेकानंद के शैक्षिकदर्शन की प्रासंगिकता पर एक अध्ययन-", JASRAE, vol. 19, no. 4, pp. 330–334, July,. https://ignited.in/index.php/jasrae/article/view/13969
39. पुष्पेन्द्र एवं कौशल, अमिता (***2021***). स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गांधीजी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education, ***18(1)***, ***120–125.***